

भारत में आधुनिक इतिहास लेखन का विश्लेषण एवं प्रासंगिकता

Dr. Shiv Charan Chaidwal*

Assistant Professor, Department in History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan-301001

शोध पत्र सारांश:- पश्चिमी विद्वानों द्वारा भारत के इतिहास को आधुनिक रूप में लिखने के लिए किए गए गहन प्रयास। उस समय देश में ऐतिहासिकता के क्षेत्र का एक संबंध था, अन्य क्षेत्रों की तरह, अनुसंधान और लेखन के प्रयासों को एक नए तरीके से शुरू किया गया था। वह सराहनीय था क्योंकि एक हजार से अधिक वर्षों की अंतिम अवधि में, इस दिशा में कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया गया था, केवल भारतीयों द्वारा 'राजतरंगिणी' के निर्माण के अलावा, वास्तव में, किसी भी देश की इतिहास, विभिन्न परंपराओं, मान्यताओं और किंवदंतियों में या जाति। इसे उस देश या जाति की भावी पीढ़ियों की कहानियों और संघर्षों का सामूहिक लेखा कहा जाता है। आज इतिहास के पुनर्लेखन के लिए व्यापक संकल्प की आवश्यकता है। इस संकल्प को देश भर में फैले इतिहासकारों में देखा जाना चाहिए, इससे अधिक यह हमारे पूरे बौद्धिक वर्ग और समाज में देखा जाना चाहिए।

शब्द कुँजी:- इतिहास लेखन की शुरुआत, इतिहास लेखन के लिए अंग्रेजों के प्रयास, भारत के इतिहास लेखन में कमियाँ, इतिहास लेखन का विश्लेषण एवं वर्तमान में इतिहास लेखन की प्रासंगिकता।

-----X-----

परिचय:

भारत का आधुनिक लिखित इतिहास आधुनिक रूप में भारत के इतिहास को लिखने की परंपरा देश में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की स्थापना के साथ शुरू हुई। कंपनी के शासन के दौरान, देश के राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, शैक्षिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों में पश्चिमीकरण की नई खोज, व्याख्याएं और प्रक्रियाएं शुरू की गईं। यदि इनमें से कुछ भारतीयों के लिए फायदेमंद थे, तो कुछ हानिकारक भी थे। फिर भी, वे पर किए गए और वॉरेन हेस्टिंग्स के समय के रूप में पहचाने गए, सत्ता की बागडोर पूरी तरह से अंग्रेजों के हाथों में पहुंच गई थी और देश में सभी काम उनकी अपनी इच्छा और आकांक्षाओं के अनुरूप होने लगे थे। लेकिन इतनी मेहनत के बाद, भारत के इतिहास, जिसे उन्होंने तैयार किया, ने भारत की ऐतिहासिक घटनाओं और तारीखों को इस तरह से प्रस्तुत किया कि इसकी वास्तविकता आज कई भारतीय विद्वानों के लिए संदिग्ध हो गई। फिर यही नहीं, जो दुविधा 200 वर्षों में अंग्रेज इस क्षेत्र में नहीं कर सके, वह पश्चिमी-उन्मुख भारतीय इतिहासकारों ने स्वतंत्र भारत के 50 वर्षों में दिखाई। वास्तव में, इतिहास को विभिन्न परंपराओं, मान्यताओं और महिमा

कहानियों और किसी भी देश या जाति के महापुरुषों के संघर्षों का सामूहिक खाता कहा जाता है, ताकि उस देश या जाति की भावी पीढ़ी प्रेरणा ले सके। जबकि भारत का इतिहास आज भी सुगम है, निराशा को इस दृष्टिकोण से विचार करके महसूस किया जाता है क्योंकि यह भविष्य की पीढ़ी का मार्गदर्शन करने की प्रेरणा प्रदान नहीं करता है। उससे उपलब्ध एकमात्र जानकारी यह है कि इस देश में किसी के पास कभी भी कोई स्वामित्व नहीं है। यहां, एक के बाद एक आक्रमणकारी थे और वे पिछले आक्रमणकारियों को अपग्रेड करके अपना वर्चस्व स्थापित करते रहे। यह देश, देश नहीं, सिर्फ एक धर्मशाला रहा है, जिसमें, जब भी और जब भी कोई व्यक्ति चाहता था, अंदर आया और कब्जे में ले लिया और मालिक के रूप में बैठ गया।

उद्देश्य:

1. भारत में आधुनिक इतिहास लेखन अध्ययन किया गया है।
2. ब्रिटिश शासन से वर्तमान शासन तक इतिहास लेखन का विश्लेषण किया गया है।

3. भारत में आधुनिक इतिहास लेखन की प्रासंगिकता बताई गई है।

परिकल्पना:

1. ब्रिटिश शासन काल में इतिहास लेखन को महत्व दिया गया।
2. आधुनिक इतिहास लेखन के प्रभाव समाज पर पड़ रहे हैं।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह:

प्रस्तुत अध्ययन के लिए आधुनिक विश्लेषण अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस अध्ययन के लिए इतिहास के तथ्यों का उपयोग किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक सूचनाओं का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न संचार माध्यम और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

इतिहास लेखन की शुरुआत:

जहां तक देश में इतिहास-लेखन के क्षेत्र में इतिहास-लेखन का संबंध था, अन्य क्षेत्रों की तरह शोध और लेखन के प्रयासों को एक नए तरीके से शुरू किया गया था। इस दृष्टिकोण से, हालांकि सर विलियम जोन्स, कोलब्रुक, जॉर्ज टर्नर, जेम्स प्रिंसेप, परज़िटर, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं, इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कार्य कलकत्ता में कार्यरत तत्कालीन न्यायाधीश सर विलियम जोन्स द्वारा किया गया था। उच्च न्यायालय। उन्होंने भारत के इतिहास को आधुनिक तरीके से लिखने के लिए एक नए तरीके से शोध करने की प्रक्रिया शुरू की। इस काम में उन्हें कंपनी के तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स का पूरा समर्थन मिला। परिणामस्वरूप, एक व्यापारिक कंपनी भारत में एक मजबूत राजशाही बन गई।

1757 ई। में प्लासी के युद्ध के परिणामों से उत्साहित होकर, न केवल भारत में काम करने वाली कंपनी के लोग, बल्कि ब्रिटिश शासकों ने, ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत पर ब्रिटिश राज्य स्थापित करने के सपने को साकार करने के लिए उसे गले लगाया था। पूरी कोशिश की। इस संदर्भ में, मैकॉले द्वारा उनके एक मित्र राउज़ को लिखे गए पत्र की यह पंक्ति उल्लेखनीय है-

“अब केवल एक नाम नहीं है, हमें वास्तव में नवाब बनना है और वह भी बिना किसी घूँघट के, हमें खुले मुंह का बनना है।” (देखें ‘भारत का इतिहास, खंड 4, पृष्ठ 332 - स्वामी विद्यानंद सरस्वती की कृति ‘आर्य देश और उनकी सभ्यता’, पृष्ठ 9 पर उद्धृत)

इतिहास लेखन के लिए अंग्रेजों के प्रयास:

भारत के इतिहास को उसके आधुनिक रूप में लिखने या लिखने के लिए, उसकी इच्छा के अनुसार, कंपनी सरकार ने ब्रिटिश इतिहासकारों के माध्यम से गहन प्रयास किए, जो भारत की प्राचीन सामग्री, जैसे ग्रंथ, शिलालेख आदि को भूल गए थे, उनकी खोज की गई थी। खोज कर। साथ ही, भारत आने वाले विदेशी यात्रियों के यात्रा विवरणों का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और उनका अध्ययन किया गया, लेकिन भारतीय सामग्री से बहुत कम मात्रा में ऐसी सामग्री मिली, जो उनके लिए उपयोगी हो सकती है। इसलिए, उन्होंने इसे अनुचित माना और इसे अप्राकृतिक कहा।

भारत के इतिहास लेखन में कमियाँ:

भारत में इतिहासलेखन में कुछ त्रुटियां थीं। अंग्रेजों ने स्व-विवेक के आधार पर भारत के इतिहास को लिखने की दृष्टि से कई मनगढ़ंत निष्कर्ष निकाले। शक्ति के बल पर उन्हें बढ़ावा देना / प्राप्त करना शुरू कर दिया। इनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं: -

- (1) प्राचीन भारतीय विद्वानों में ऐतिहासिक लेखन क्षमता का अभाव था।
- (2) भारत में विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक अध्ययन के लिए बहुत कम मात्रा में सामग्री उपलब्ध थी।
- (3) भारत के प्राचीन विद्वानों की जनगणना की कोई निश्चित और ठोस विधि कभी नहीं रही है।
- (4) भारत के इतिहास की अधिक सटीक तारीखें वे थीं जो भारत से नहीं बल्कि विदेशों से पाई गईं।
- (5) भारत के इतिहास में सबसे पुरानी सीमा 2500-3000 ईसा पूर्व तक रही।
- (6) आर्य लोग भारत में बाहर से आए, उन्होंने इस क्षेत्र के पूर्व निवासियों को युद्धों में हराया और अपना

राज्य स्थापित किया और हारे हुए लोगों को गुलाम बनाया।

- (7) प्राचीन भारतीय पौराणिक साहित्य में वर्णित राजवंश और प्राचीन साम्राज्य अतिशयोक्ति के कारण अप्राकृतिक और अविश्वसनीय हैं।
- (8) रामायण, महाभारत और अन्य प्राचीन भारतीय ग्रंथ 'मिथक' हैं।
- (9) संपूर्ण रूप से भारत का शासन एक केंद्रीय सत्ता के अधीन ब्रिटिश शासन के आने से पहले कभी नहीं था।

उपर्युक्त निष्कर्षों का प्रसार करके, उन्होंने न केवल भारत के सभी प्राचीन साहित्य को खारिज कर दिया, साथ ही साथ भारतीय पुराणों, धार्मिक ग्रंथों और प्राचीन साहित्य में सुलभ सभी ऐतिहासिक तथ्यों और कहानियों को अप्राकृतिक और अविश्वसनीय माना जाता है।

इतिहास लेखन का विश्लेषण:

भारत में, जवाहरलाल नेहरू और उनके उत्तराधिकारियों ने कम्युनिस्ट बुद्धिजीवियों को सत्ता में प्रवेश करने और इसे अपने नियंत्रण में करने का अवसर दिया। एक राजनीतिक शक्ति के रूप में, मार्क्सवादी ज्यादा विकसित नहीं हो सके। वे मजदूर आंदोलन में भी पिछड़ गए। लेकिन इतिहास लेखन में उन्होंने अपनी पकड़ बनाई। इसका एक मुख्य कारण ब्रिटिश और अमेरिकी शिक्षण संस्थानों के वामपंथियों से उनका समर्थन है। यह मार्क्सवादी हैं जो भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की वास्तविक भावना के बौद्धिक उत्तराधिकारी हैं। उन्होंने भारत के इतिहास को नकारात्मक तरीके से देखने के लिए एक अभियान शुरू किया है। ब्रिटिश शासकों की तरह वे भी भारतीय इतिहास की अवमानना के लिए मुसलमानों का इस्तेमाल करते रहे हैं। उन्होंने बेशर्मी से मुस्लिम शासकों के पापों को धोने और हिंदू समाज और उसकी प्रणालियों की निन्दात्मक व्याख्या करने का काम किया है। मार्क्सवादी इतिहासकार भारत के युवाओं के बीच अपने इतिहास के प्रति तिरस्कार और अवमानना करने की कोशिश कर रहे हैं। उसी का परिणाम है कि हाल के आंदोलनों में बहुत से युवा हिंदू राष्ट्र का उल्लेख बहुत अश्लीलता से कर रहे थे।

वर्तमान में इतिहास लेखन की प्रासंगिकता:

इतिहास लिखने का कार्य आसान नहीं है, इसके लिए राज्य निर्धारण और साधनों की आवश्यकता होती है, लेकिन इतिहास

लेखन को किसी भी राज्य की स्थापना पर नहीं छोड़ा जा सकता है। इतिहास को फिर से लिखने के लिए व्यापक संकल्प की आवश्यकता है। इस संकल्प को देश भर में फैले इतिहासकारों में देखा जाना चाहिए, इससे अधिक यह हमारे पूरे बौद्धिक वर्ग और समाज में देखा जाना चाहिए।

कुछ समय पहले, भारत के विद्वानों ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में स्कंदगुप्त पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोलते हुए, भारतीय इतिहास को फिर से लिखने पर जोर दिया यदि उन्होंने भारतीय इतिहास को फिर से लिखने पर जोर दिया, तो यह माना जा सकता है कि इस विषय को देश की प्राथमिकताओं में जोड़ा गया है। अब तक जो इतिहास लिखा गया है, वह भारतीय समाज में विभिन्न स्तरों पर असंतोष व्यक्त करता रहा है। कई लोगों ने स्थानीय स्तर पर अपना इतिहास लिखने की भी कोशिश की है।

लेकिन इस तरह के छिटपुट प्रयास भारतीय इतिहास में व्याप्त विसंगतियों को दूर नहीं कर सकते। यह काम योजनाबद्ध तरीके से होना चाहिए। प्रत्येक इतिहासकार को स्थानीय इतिहास से अपना शैक्षणिक जीवन शुरू करना आवश्यक होना चाहिए। इतिहास के स्रोत के रूप में, हमें अपने लोक साहित्य और लोक स्मृति को भी उचित महत्व देना चाहिए। इसके आधार पर भारत का एक बड़ा और राष्ट्रीय इतिहास लिखा जा सकता है। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि हम अपने दृष्टिकोण से अपना इतिहास लिखें। आधुनिक इतिहासलेखन की नींव भारत में अंग्रेजों ने रखी थी। उनका इतिहास लेखन से जुड़ा एक राजनीतिक उद्देश्य था। हमारे इतिहासकारों ने इस पर उचित ध्यान नहीं दिया। भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने इतिहास को अपने दृष्टिकोण से लिखें।

निष्कर्ष:

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि ब्रिटिश शासन ने इतिहास लेखन के काम में पूरा सहयोग दिया, जबकि कंपनी ने उन लोगों को भी समर्थन और प्रोत्साहित किया जो भारतीय इतिहास से संबंधित बयानों और तथ्यों को अप्राकृतिक, अवास्तविक, अतिरंजित और सारहीन साबित हुए। करने की कोशिश की। पाश्चात्य विद्वानों की भारतीय इतिहासलेखन के संदर्भ में, तत्कालीन शासक ने उपरोक्त निष्कर्षों और मानदंडों के आधार पर आधुनिक रूप में भारत की इतिहासलेखन की रचना की थी। इतिहास लिखने का कार्य आसान नहीं है, इसके लिए राज्य निर्धारण और साधनों की आवश्यकता होती है,

लेकिन इतिहास लेखन को किसी भी राज्य की स्थापना पर नहीं छोड़ा जा सकता है। इतिहास को फिर से लिखने के लिए व्यापक संकल्प की आवश्यकता है। इस संकल्प को देश भर में फैले इतिहासकारों में देखा जाना चाहिए, इससे अधिक यह हमारे पूरे बौद्धिक वर्ग और समाज में देखा जाना चाहिए। इसलिए, भारतीय इतिहास को फिर से लिखने के लिए यह आवश्यक है कि हम वर्तमान में सही और प्रामाणिक इतिहास लिखें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. ई. श्री धरन, इतिहासलेख: एक पाठ्यपुस्तक, नई दिल्ली ओरियंटल ब्लैक स्वॉन, 2011
2. बिपन चन्द्र -, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, नई दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय 1998।
3. सुमित सरकार, आधुनिक भारत: 1885-1947, नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन, 2002
4. द्विजेन्द्र नारायण झा, प्राचीन भारत:- सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की पड़ताल, दिल्ली ग्रन्थ शिल्पी, 2000।
5. आधुनिक भारत के इतिहास के स्रोत, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

Corresponding Author

Dr. Shiv Charan Chaidwal*

Assistant Professor, Department in History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan-301001